International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 11, November 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

आधुनिक युवापीढ़ी का वृद्धजनों के प्रति मनोवृत्ति एवं व्यवहार का अध्ययन

संजय मैहरा,
शोधार्थी, शिक्षा-विभाग,
एच.पी.यू. शिमला

प्रस्तावना :

मनुष्य पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। यह उसने सिद्ध कर दिया है। मनुष्य ने आज पक्षी की भांति आकाश में उड़ना तथा मछली की भाँति पानी में रहना सीख लिया है। आज मानव ने विज्ञान के क्षेत्र में बहुत उन्नति कर ली है। आज के युग को तकनीकी का युग माना जाता है। उसने चन्द्रमा और अंतरिक्ष पर भी विजय पा ली है। विज्ञान की वजह से आज सारा संसार छोटा सा तथा एक प्रतीत होता है। लेकिन हम आपस में एक दूसरे से कैसे बंधे हुए हैं। यह हम उसके अंदर झांककर ही पता लगा सकते हैं।

मनुष्य ने आज इतनी उपलब्धियां प्राप्त की है लेकिन उसके साथ उसने कुछ खोया भी है। जो खोया है, वह है नैतिक मूल्य तथा मानवीय मूल्य। गिरते नैतिक मूल्य तथा मानवीय मूल्य मनुष्य के लिए एक विचारणीय विषय बन गया है। जोकि मानवता के लिए किसी खतरे से कम नहीं है।

अध्ययन की आवश्यकता :

आधुनिकीकरण की वजह से संयुक्त परिवारों का बिखराव हो गया है । तथा परिवार की छोटी-छोटी इकाईयां अस्तित्व में आई । संयुक्त परिवारों के बिखराव की सबसे बुरी मार वृद्धों पर पड़ी है । आधुनिकीकरण और अधिक उदारीकरण ने जहां वृद्धों के लिए समय पूर्व ही कार्य क्षेत्र

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

से सेवानिवृति की परिस्थितियां पैदा कर दी है, तो संयुक्त परिवारों के बिखराव ने उन्हें अपने घर ही चारदीवारी में नितांत अकेला कर दिया है ।

आज समाज में वृद्धों की उपेक्षा लगातार बढ़ रही है । वृद्धाश्रमों की बढ़ती हुई संख्या तथा वृद्धों की उपेक्षा में हो रही वृद्धि के कारण इस अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्ता बढ़ जाती है। बढ़ती हुई वृद्धाश्रमों की संख्या और इस समस्या के हल के लिए राष्ट्रव्यापी प्रयास किये जाने की आवश्यकता तथा अर्थोन्मुख होती आज की युवापीढ़ी को देखकर इस अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्ता बढ़ जाती है।

समस्या का कथन :

"आधुनिक युवापीढ़ी का वृद्धजनों के प्रति मनोवृत्ति एवं व्यवहार का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :

1. युवापीढ़ी को वृद्धजनों के प्रति जिम्मेवारियों का अहसास करवाना।
2. आधुनिक समाज में वृद्धजनों की क्या हालत है, के बारे में अध्ययन करना।

परिकल्पना :

1. आज का युवावर्ग वृद्धजनों के प्रति उदासीन है ।
2. वृद्धजन युवावर्ग की उपेक्षा का शिकार है ।
3. आधुनिक युवावर्ग की वृद्धजनों के प्रति मनोवृत्ति एवं व्यवहार में कोई विशेष अन्तर नहीं है ।

अध्ययन की परिसीमाएं :

1. समय के अभाव के कारण प्रस्तुत शोध जिला कुरुक्षेत्र तक सीमित रखा गया है।
2. युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार तक सीमित रखा गया है ।
3. युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वयं निर्मित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :

शोधार्थी ने न्यादर्श के लिए सरल सम सम्भाविक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया है । न्यादर्श में 50 छात्र और 50 छात्राएँ कुरुक्षेत्र शहर से लिए गए है ।

उपकरण :

शोधार्थी द्वारा युवाओं से प्रदत्त एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए विधि :

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया । सर्वप्रथम शोधार्थी ने प्रत्येक प्रश्न का हां या नहीं के आधार पर प्रतिशत ज्ञात किया और फिर इसकी व्याख्या की गई ।

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या :

1. क्या आप उनकी अनुपस्थिति में भी सम्मानजनक भाषा का प्रयोग करते है?

तालिका–1

हां :	नहीं :	कुल :
86	14	100

व्याख्या : 86 युवाओं ने बताया कि हम बुजुर्गों की अनुपस्थिति में भी सम्मानजनक भाषा का प्रयोग करते हैं तथा 14 युवाओं ने बताया कि वे उनकी अनुपस्थिति में सम्मानजनक भाषा का प्रयोग नहीं करते हैं।

2. क्या आप बुजुर्गों की नसीहत मानते है?

तालिका–2

हां :	नहीं :	कुल :
74	26	100

व्याख्या : 74 युवाओं ने बताया कि वो उनके बुजुर्गों की नसीहत को मानते हैं तथा 26 युवाओं ने बताया कि वो उनके बुजुर्गों की नसीहत को नहीं मानते हैं।

3. क्या आप बुजुर्गों द्वारा दी गई नसीहतों का उल्लंघन करते हैं?

तालिका-3

हां :	नहीं :	कुल :
26	74	100

व्याख्या: 26 युवाओं ने बताया कि वे उनके बुजुर्गों द्वारा दी गई नसीहतों का उल्लंघन करते है तथा 74 युवाओं ने बताया कि वे उनके बुजुर्गों द्वारा दी गई नसीहतों का उल्लंघन नहीं करते हैं।

4. क्या आप माता-पिता के साथ रहना पसन्द करते हैं?

तालिका-4

हां :	नहीं :	कुल :
90	10	100

व्याख्या: 90 प्रतिशत युवाओं ने बताया कि वे अपने माता-पिता के साथ रहना पसन्द करते है तथा 10 युवाओं ने बताया कि वे माता-पिता के साथ रहना पसन्द नहीं करते हैं।

5. क्या माता-पिता को अपने बच्चों के निजी मामलों में दखल अंदाजी करनी चाहिए?

तालिका-5

हां :	नहीं :	कुल :
13	87	100

व्याख्या : 13 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि माता-पिता को उनके बच्चों के निजी मामलों में दखल-अंदाजी करनी चाहिए तथा 87 युवाओं का मानना है कि उनके माता-पिता को बच्चों के निजी मामलों में दखल-अंदाजी नहीं करनी चाहिए।

6. क्या आपको आपके बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए

तालिका-6

हां :	नहीं :	कुल :
92	8	100

व्याख्या : 92 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि उनको बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए तथा 8 युवाओं का मानना है कि उनको बुजुर्गों की सेवा नहीं करनी चाहिए।

7. क्या आप समझते हैं कि सेवा के बहाने बुजुर्ग युवाओं के कार्यों में अनावश्यक हस्ताक्षेप करते हैं?

तालिका-7

हां :	नहीं :	कुल :
40	60	100

व्याख्या : 40 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि सेवा के बहाने बुजुर्ग उनके कार्यों में हस्तक्षेप करते है। तथा 60 युवाओं का मानना है कि सेवा के बहाने बुजुर्ग उनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं।

मुख्य निष्कर्ष :

युवाओं से एकत्रित किये गये प्रदत्तों से पता चलता है कि सभी युवा अपने वृद्धजनों का सम्मान करते हैं तथा उनके दु:ख से दु:खी होते हैं और कोई भी युवा अपने वृद्धजन को वृद्धाश्रम में भेजने का इच्छुक नहीं है ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार में अन्तर है । जबकि कहने के लिए सभी युवा अपने आपको आदर्शवादी दिखाते हैं, लेकिन व्यावहारिकता में सभी उच्च दिखाई नहीं पड़ते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत अध्ययन कुरुक्षेत्र जिले के युवाओं की मनोवृत्ति एवं व्यवहार को जानने के लिए किया गया है । आज के समय में वृद्धों की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । यह समस्या आधुनिक युवावर्ग का वृद्धजनों के प्रति उदासीनता के कारण हो रही है तथा वृद्धजन युवावर्ग की उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं । यह देखकर कि आज के समय में हमारे वृद्धजन जिनकी बदौलत हम आज यहां तक पंहुचे हैं उनकी समस्याओं का समाधान अति आवश्यक हो जाता है ।

प्रस्तुत शोध कार्य आज के युवाओं माता-पिता तथा अध्यापकों के लिए विशेष महत्व रखता है । माता-पिता बच्चों को ऐसे संस्कार तथा वातावरण दें कि आगे चलकर वे अपने वृद्धजनों तथा माता-पिता के प्रति उदासीन न हों । माता-पिता उनकी जरूरतों को समझें तथा उनकी जिन्दगी में आने वाली कठिनाईयां को दूर करने में मदद करें और उनके सामर्थ्य के अनुरूप आशा करें । लड़कों और लड़कियों को एक समान शान्तिपूर्ण एवं उनकी रुचियों के अनुसार कार्य करने दें ।

REFERENCES

- Aggarwal, Y.P. (1986), Statistical method – concepts application and computation, New Delhi; sterling publication.
- Verma Anil (1998), News paper, Dainik Tribune, 5 Nov.
- Bajpai, P.K. (1997), Social work Perspectives on Health. Jaipur; Rawat Publication.
- Editor 10 Jan. (1999). The Tribune.
- Hasan Saiyad Zafar, Ageing in India, Minerva Association (Pub.) Pvt. Ltd. Lake Place Calcutta – 700029,
- Hazara Singh 2 Feb. 1999, Newspaper, The Tribune.
- Sudha Katyal 2004, Kumar Vijay 2001, Magzine, Social Welfare Vaisary
- Mukharji, Subha (30 Jan. 1990), Newspaper, Dainik Tribune.
- Nimkoff (1982), Changing Family Relationship of order of people in the united state during the fast fifty years, New York.
- Reddy, P.Jayarami (1986), Inter-Generational Suppor : A Reality on Myth.
- Upadhyay, R.K. (1999), A Study of the problem of the aged and need for social intervention in the states of Haryana & Himachal Pardesh.
- Urrashi 23 Jan. 2004, Newspaper, Dainik Tribune.
- Nisha Jain 3 Feb. 2004, Newspaper, Punjab Kesari.